पाठ 12: भदंत आनंद कौसल्यायन (संस्कृति)

पाठ का सार (Summary):
इस निबंध में लेखक ने 'सभ्यता' (Civilization) और 'संस्कृति' (Culture) के बीच का बारीक अंतर स्पष्ट किया है। लेखक के अनुसार, जो व्यक्ति अपनी बुद्धि से किसी नई चीज़ (जैसे आग या सूई-धागे) का आविष्कार करता है, वह **'संस्कृत मानव'** है। उस व्यक्ति की खोज का फायदा जब आगे आने वाली पीढ़ियों को बिना मेहनत के मिल जाता है, तो वह **'सभ्यता'** कहलाती है। यानी संस्कृति 'कारण' है और सभ्यता उसका 'परिणाम'। लेखक यह भी मानता है कि मानव-कल्याण के लिए किए गए आविष्कार ही सच्ची संस्कृति हैं। जो योग्यता मानव के विनाश (जैसे परमाणु बम) के साधन बनाती है, उसे संस्कृति नहीं बल्कि 'असंस्कृति' कहना चाहिए।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

लेखक के अनुसार 'सभ्यता' और 'संस्कृति' इन दो शब्दों का प्रयोग लोग बहुत अधिक करते हैं, लेकिन इनकी सही समझ इसलिए नहीं बन पाई है क्योंकि लोग इन दोनों को एक ही मान लेते हैं या इनके साथ कई विशेषण (जैसे भौतिक-सभ्यता, आध्यात्मिक-संस्कृति) जोड़ देते हैं। इन विशेषणों के जुड़ने से मूल अर्थ और भी भ्रमित (confusing) हो जाता है, जिससे यह तय करना मुश्किल हो जाता है कि सभ्यता क्या है और संस्कृति क्या है।

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

आग की खोज मानव इतिहास की सबसे बड़ी खोजों में से एक है क्योंकि इससे मानव जीवन पूरी तरह से बदल गया। आग के कारण ही मनुष्य ने ठंड से बचना, भोजन को पकाकर खाना, और अँधेरे में रोशनी करना सीखा।

प्रेरणा के मुख्य स्रोत: इसके पीछे मुख्य प्रेरणा पेट की भूख शांत करने (पका हुआ स्वादिष्ट भोजन खाने) और ठंड से शरीर को बचाने (शीत से रक्षा) की आवश्यकता रही होगी। मनुष्य की इसी बुनियादी ज़रूरत (Need) ने उसे आग का आविष्कार करने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' उसे कहा जाता है जो अपनी बुद्धि, योग्यता और प्रेरणा का उपयोग करके किसी नई और उपयोगी चीज़ का आविष्कार करता है। यानी वह व्यक्ति जो कुछ 'नया' खोजता है या किसी नए ज्ञान का निर्माण करता है (जैसे आग या सुई-धागे की खोज करने वाला पहला व्यक्ति)। केवल पूर्वजों के ज्ञान को सीख लेना व्यक्ति को 'सभ्य' तो बना सकता है, लेकिन 'संस्कृत' नहीं।

प्रश्न 4. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

न्यूटन को 'संस्कृत मानव' इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि और शोध से पहली बार गुरुत्वाकर्षण (Gravity) के सिद्धांत का आविष्कार किया था। उन्होंने कुछ 'नया' खोजा था।

आज के विज्ञान के विद्यार्थी न्यूटन के सिद्धांत के साथ-साथ कई अन्य आधुनिक बातें भी जानते हैं, फिर भी वे न्यूटन की तरह 'संस्कृत' नहीं कहला सकते। ऐसा इसलिए है क्योंकि आज के छात्रों को यह ज्ञान बना-बनाया (विरासत में) मिल गया है; उन्होंने स्वयं इसका आविष्कार नहीं किया। आधुनिक छात्र 'सभ्य' तो हैं, परन्तु 'संस्कृत' नहीं।

प्रश्न 5. किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सूई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

सूई-धागे का आविष्कार मुख्य रूप से निम्नलिखित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हुआ होगा:

1. शरीर को भयंकर सर्दी और मौसम की मार से बचाने के लिए दो कपड़ों को आपस में जोड़कर पहनने योग्य बनाने के लिए।

2. मनुष्य की शरीर को सजाने और सुंदर दिखने की इच्छा (सौंदर्य-बोध) ने भी उसे कपड़ों को सिलकर पहनने के लिए सूई-धागे के आविष्कार को प्रेरित किया होगा।

Schorbit

प्रश्न 6. **"मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब-**
(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं,
(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।

(क) विभाजित करने की चेष्टाएँ (बाँटने की कोशिश): जब लोग धर्म, जाति, रंग या राष्ट्र के नाम पर एक-दूसरे से लड़ते हैं, और हिंदू संस्कृति व मुस्लिम संस्कृति जैसे बँटवारे करते हैं, तो यह संस्कृति को विभाजित करने का प्रयास है।

(ख) एक होने का प्रमाण: जब किसी भी धर्म या देश का व्यक्ति अपनी जान पर खेलकर दूसरों की मदद करता है। जैसे कार्ल मार्क्स ने मज़दूरों के लिए जीवन भर काम किया, या सिद्धार्थ (बुद्ध) ने मानव कल्याण के लिए राजपाट छोड़ दिया, तो यह सिद्ध होता है कि कल्याण की भावना वाली मानव संस्कृति पूरी दुनिया में एक ही (अविभाज्य) है।

प्रश्न 7. **आशय स्पष्ट कीजिए- "मानव की जो योग्यता उससे आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?"**

आशय: लेखक का मानना है कि 'संस्कृति' वह है जो मानव समाज का कल्याण करे। आज के समय में मनुष्य अपनी बुद्धि का प्रयोग करके परमाणु बम और विनाशकारी हथियार बना रहा है। ये हथियार पूरी मानव जाति का नाश (आत्म-विनाश) कर सकते हैं। लेखक सवाल उठाता है कि जो योग्यता दुनिया को खत्म करने के लिए काम आ रही हो, वह भलाई (संस्कृति) कैसे हो सकती है? उसे निश्चित रूप से बुराई यानी **'असंस्कृति'** ही कहा जाना चाहिए।

© 2026 schorbit.com. All rights reserved.
Prepared exclusively for Schorbit Students